

B.COM 2ND year
Paper---परिव्यय लेखांकन

Unit -1

□ **लागत का सामान्य अर्थ (General Meaning of Lagat)**

लागत का अर्थ है —

किसी वस्तु या सेवा के उत्पादन (Production), प्राप्ति (Procurement), वितरण (Distribution) या उपयोग (Utilization) में जो व्यय (Expenditure) या त्याग (Sacrifice) किया जाता है, उसे लागत कहा जाता है।

अर्थात्, जब हम कोई चीज़ बनाते हैं या सेवा प्रदान करते हैं, तो उस कार्य को करने में जो धन, समय, श्रम, पूंजी या संसाधन खर्च होते हैं, वही उसकी लागत (Cost) कहलाती है।

□ **लागत की परिभाषाएँ (Definitions of Cost)**

1. ए. सी. पिगू (A.C. Pigou) के अनुसार —

"लागत वह त्याग है जो किसी वस्तु के उत्पादन के लिए करना पड़ता है।"
इसका अर्थ है कि लागत केवल धनराशि नहीं होती, बल्कि उसमें श्रम, समय और अवसर का त्याग भी शामिल होता है।

2. मार्शल (Marshall) के अनुसार —

"किसी वस्तु के उत्पादन में प्रयुक्त संसाधनों के प्रतिफल को लागत कहते हैं।"
अर्थात् उत्पादन में जो भी उत्पादन कारक (जैसे भूमि, श्रम, पूंजी, उद्यमिता) लगे हैं, उन्हें दिया गया पारिश्रमिक ही लागत है।

□ **लागत के प्रकार (Types of Cost)**

1. **स्पष्ट लागत (Explicit Cost):**

जो लागतें वास्तविक रूप में भुगतान की जाती हैं, जैसे — मजदूरी, किराया, बिजली बिल, कच्चा माल आदि।

□ उदाहरण: किसी फैक्ट्री में मशीन चलाने के लिए बिजली का बिल ₹10,000 आता है — यह स्पष्ट लागत है।

2. **अस्पष्ट लागत (Implicit Cost):**

जो लागतें प्रत्यक्ष रूप से नहीं दी जातीं, लेकिन संसाधनों के उपयोग से जुड़ी होती हैं।

□ उदाहरण: यदि कोई व्यापारी अपनी ही जमीन पर दुकान चलाता है, तो जमीन का किराया वह खुद को नहीं देता — परंतु यह भी एक अवसर लागत (Opportunity Cost) है।

3. **स्थिर लागत (Fixed Cost):**

जो उत्पादन की मात्रा बदलने पर भी नहीं बदलती।

□ उदाहरण: किराया, मशीनरी का बीमा, प्रबंधक का वेतन आदि।

4. **चल लागत (Variable Cost):**

जो उत्पादन बढ़ने या घटने पर बदल जाती है।

□ उदाहरण: कच्चा माल, मजदूरों की दिहाड़ी, बिजली खर्च।

5. **कुल लागत (Total Cost):**

स्थिर लागत + चल लागत = कुल लागत

$$TC=FC+VCTC = FC + VCTC=FC+VC$$

6. **औसत लागत (Average Cost):**

प्रति इकाई उत्पादन पर आने वाली लागत।

$$AC=TCQAC = \frac{TC}{Q}AC=QTC$$

(जहाँ Q = उत्पादन की मात्रा)

7. **सीमांत लागत (Marginal Cost):**

उत्पादन की एक अतिरिक्त इकाई बनाने पर जो अतिरिक्त लागत आती है।

$$MC=\Delta TC\Delta QMC = \frac{\Delta TC}{\Delta Q}MC=\Delta Q\Delta TC$$

□ **लागत का आर्थिक दृष्टिकोण (Economic Viewpoint)**

अर्थशास्त्र में **लागत** का मतलब केवल पैसों का खर्च नहीं है, बल्कि यह “**अवसर लागत**” (Opportunity Cost) भी है —

अर्थात्, जब हम किसी संसाधन का उपयोग एक कार्य में करते हैं, तो हम उसे किसी अन्य कार्य में उपयोग करने का अवसर खो देते हैं — यही अवसर लागत कहलाती है।

□ उदाहरण:

यदि कोई व्यक्ति ₹10 लाख से दुकान खोलता है, तो वह पैसा बैंक में जमा कर ब्याज भी कमा सकता था।

वह ब्याज जो वह नहीं कमा पाया, उसकी अवसर लागत है।

□ **संक्षेप में (In Short):**

तत्व	विवरण
शब्द	लागत (Cost)
मुख्य अर्थ	किसी वस्तु या सेवा के उत्पादन में हुआ व्यय या त्याग
रूप	धन, श्रम, समय, संसाधन, अवसर
मुख्य प्रकार	स्पष्ट, अस्पष्ट, स्थिर, चल, कुल, औसत, सीमांत
आर्थिक दृष्टिकोण	अवसर लागत (Opportunity Cost) को शामिल करता है

“लागत की अवधारणा

□ **लागत की अवधारणा (Concept of Cost / लागत की अवधारणा)**

अर्थशास्त्र में “लागत” (Cost) का तात्पर्य उस व्यय (Expenditure) या त्याग (Sacrifice) से है, जो किसी वस्तु या सेवा के उत्पादन में किया जाता है।

जब कोई उत्पादक किसी वस्तु का निर्माण करता है, तो उसे उस निर्माण के लिए **संसाधनों** (जैसे भूमि, श्रम, पूंजी, उद्यमिता) का उपयोग करना पड़ता है।

इन संसाधनों को प्राप्त करने के लिए जो **भुगतान** किया जाता है, वही उसकी **लागत (Cost)** कहलाती है।

□ लागत की मूल भावना (Essence of Cost Concept)

“लागत” केवल धनराशि में मापी जाने वाली चीज़ नहीं है, बल्कि यह उन सभी संसाधनों के मूल्य का मापन है जो किसी वस्तु या सेवा को प्राप्त करने में लगाए जाते हैं।

इसलिए, लागत का अर्थ है —

किसी वस्तु या सेवा को प्राप्त करने के लिए किए गए त्याग (Sacrifice) का आर्थिक मूल्य।

□ लागत की परिभाषाएँ (Definitions)

1. ए. सी. पिगू (A.C. Pigou) के अनुसार —

"लागत वह त्याग है जो किसी वस्तु के उत्पादन के लिए करना पड़ता है।"

2. मार्शल (Alfred Marshall) के अनुसार —

"किसी वस्तु के उत्पादन में प्रयुक्त उत्पादन कारकों को जो पारिश्रमिक दिया जाता है, वही उस वस्तु की लागत है।"

3. मॉडर्न अर्थशास्त्रियों के अनुसार —

“लागत” का अर्थ “अवसर लागत” (Opportunity Cost) से है — यानी जब किसी संसाधन का उपयोग एक कार्य में किया जाता है, तो दूसरे कार्य में उपयोग करने का जो अवसर खो जाता है, वही लागत कहलाता है।

□ लागत की अवधारणा के मुख्य तत्व (Main Elements of Cost Concept)

तत्व	विवरण
1. व्यय (Expenditure)	उत्पादन हेतु किया गया वास्तविक धन-व्यय
2. संसाधन (Resources)	भूमि, श्रम, पूंजी, उद्यमिता
3. त्याग (Sacrifice)	समय, श्रम, अवसर आदि का त्याग

तत्व	विवरण
4. अवसर लागत (Opportunity Cost)	किसी वैकल्पिक उपयोग का खोया हुआ लाभ
5. आर्थिक दृष्टिकोण (Economic Viewpoint)	लागत को केवल पैसों में नहीं, बल्कि संसाधनों के त्याग के रूप में देखा जाता है

□ लागत के प्रकारों से संबंध (Relation with Cost Types)

लागत की अवधारणा को बेहतर समझने के लिए हम इसके प्रकारों को देखते हैं —

- स्पष्ट लागत (Explicit Cost) — जो सीधे भुगतान के रूप में होती है।
- अस्पष्ट लागत (Implicit Cost) — जो संसाधन के उपयोग से जुड़ा हुआ अवसर-लाभ होता है।
- अवसर लागत (Opportunity Cost) — जो वैकल्पिक अवसर के त्याग से जुड़ी होती है।

□ इस प्रकार, लागत की अवधारणा केवल धन-व्यय तक सीमित नहीं है, बल्कि यह किसी वस्तु के उत्पादन में किए गए समग्र त्याग का आर्थिक मूल्य है।

□ उदाहरण द्वारा समझिए (Example):

मान लीजिए, एक व्यक्ति ₹10 लाख से दुकान खोलता है।

- उसे किराया, बिजली, कर्मचारियों का वेतन, और कच्चा माल के लिए भुगतान करना पड़ता है — यह है स्पष्ट लागत (Explicit Cost)।
- यदि वह अपनी स्वयं की इमारत और स्वयं की पूंजी का उपयोग करता है, तो वह किराया और ब्याज खो देता है — यह है अस्पष्ट लागत (Implicit Cost)।
- बैंक में पैसा जमा कर ब्याज कमाने का जो अवसर खो गया — वह है अवसर लागत (Opportunity Cost)।

□ इन सबको मिलाकर बनती है “लागत की वास्तविक अवधारणा।”

□ संक्षेप में (In Short):

बिंदु	विवरण
शब्द	लागत (Cost)
अर्थ	उत्पादन में किए गए व्यय और त्याग का मूल्य
दृष्टिकोण	आर्थिक दृष्टि से यह अवसर लागत पर आधारित है
उद्देश्य	किसी वस्तु या सेवा के उत्पादन की वास्तविक कीमत जानना
रूप	धन, श्रम, समय, अवसर, संसाधन

“लागत के तत्व

लागत (Cost) क्या है?

लागत उस मूल्य को कहते हैं जो किसी वस्तु या सेवा के उत्पादन या खरीद के लिए खर्च किया जाता है। किसी भी वस्तु की लागत का निर्धारण उसके निर्माण, उत्पादन और वितरण में लगे संसाधनों और खर्चों पर निर्भर करता है।

लागत के मुख्य तत्व (Components of Cost)

आम तौर पर लागत को तीन प्रमुख तत्वों में बाँटा जाता है:

1. कच्चा माल (Material Cost)
2. मजदूरी (Labour Cost)
3. खर्च या व्यय (Overheads / Expenses)

अब इनको विस्तार से समझते हैं:

1. कच्चा माल (Material Cost)

कच्चा माल वह मुख्य वस्तु है जो उत्पादन प्रक्रिया में प्रयोग होती है। इसे हम दो हिस्सों में बाँट सकते हैं:

- **कच्चा/मुख्य माल (Direct Material):**

सीधे उत्पाद का हिस्सा बनने वाला माल। उदाहरण: एक कुर्सी बनाने में लकड़ी, लोहे की नोक।

- **विशेषताएँ:**

- सीधे उत्पाद में बदल जाता है।
 - लागत आसानी से मापी जा सकती है।

- **सहायक/आसन्न सामग्री (Indirect Material):**

उत्पादन में उपयोग होता है पर सीधे उत्पाद का हिस्सा नहीं बनता। उदाहरण: मशीन तेल, पेंट, गोंद।

- **विशेषताएँ:**

- उत्पादन प्रक्रिया का हिस्सा है, पर सीधे उत्पाद में नहीं जाता।
 - लागत सीधे ट्रैक करना मुश्किल हो सकता है।

2. मजदूरी (Labour Cost)

मजदूरी वह मूल्य है जो श्रमिकों को काम करने के लिए दिया जाता है। इसे भी दो हिस्सों में बाँटा जा सकता है:

- **प्रत्यक्ष मजदूरी (Direct Labour):**

जो श्रमिक सीधे उत्पादन में लगे हैं।

उदाहरण: किसी कुर्सी को बनाने वाला कारीगर।

- **अप्रत्यक्ष मजदूरी (Indirect Labour):**

जो श्रमिक उत्पादन में सीधे नहीं लगे हैं।

उदाहरण: सुपरवाइजर, सफाईकर्मी।

3. व्यय / खर्च (Overheads)

व्यय वे खर्च हैं जो उत्पादन में लगते हैं, लेकिन न तो सीधे सामग्री हैं और न सीधे मजदूरी। इसे भी तीन हिस्सों में बाँटा जा सकता है:

- **निर्माण व्यय (Manufacturing Overhead / Factory Expenses):**

उत्पादन से जुड़े अप्रत्यक्ष खर्च।

उदाहरण: मशीन की मरम्मत, फैक्ट्री का बिजली बिल।

- **प्रशासनिक व्यय (Administrative Overhead):**
उत्पादन की योजना और नियंत्रण में होने वाले खर्च।
उदाहरण: प्रबंधक का वेतन, कार्यालय का खर्च।
- **विपणन और बिक्री व्यय (Selling & Distribution Overhead):**
उत्पाद को बेचने और वितरित करने में आने वाले खर्च।
उदाहरण: विज्ञापन, ट्रांसपोर्टेशन।

लागत तत्वों का सारांश तालिका में

लागत का तत्व	प्रकार	उदाहरण
कच्चा माल	प्रत्यक्ष / अप्रत्यक्ष	लकड़ी, मशीन तेल
मजदूरी	प्रत्यक्ष / अप्रत्यक्ष	कारीगर, सुपरवाइजर
व्यय / खर्च	निर्माण, प्रशासनिक, बिक्री फैक्ट्री	बिजली बिल, प्रबंधक वेतन, विज्ञापन

नोट्स और गहरी समझ

1. **प्रत्यक्ष तत्व (Direct Material + Direct Labour)** – इन्हें सीधे ट्रैक किया जा सकता है और उत्पाद की यूनिट लागत में जोड़ा जाता है।
2. **अप्रत्यक्ष तत्व (Indirect Material + Indirect Labour + Overheads)** – इन्हें अलग से जोड़कर पूरे उत्पादन की लागत का हिस्सा बनाया जाता है।
3. **लागत का उद्देश्य:** उत्पादन की वास्तविक लागत जानना, मूल्य निर्धारण करना और लाभ का निर्धारण करना।

“लागत की प्रकृति

1. लागत (Cost) क्या है?

लागत वह मूल्य है जो किसी वस्तु या सेवा को बनाने, प्राप्त करने या उपलब्ध कराने के लिए खर्च किया जाता है। सरल शब्दों में, यह वह धनराशि है जो किसी उत्पादन या क्रय गतिविधि में लगी होती है।

उदाहरण: अगर एक कुर्सी बनाने में कच्चा माल ₹500, मजदूरी ₹200 और अन्य खर्च ₹100 लगता है, तो कुर्सी की लागत होगी:

$$₹500 + ₹200 + ₹100 = ₹800$$

2. लागत की प्रकृति (Nature of Cost)

लागत की प्रकृति को समझने का अर्थ है यह जानना कि लागत किस प्रकार से उत्पन्न होती है, इसका स्वरूप कैसा होता है और यह व्यवसाय के निर्णयों को कैसे प्रभावित करती है।

लागत की प्रकृति को निम्नलिखित बिंदुओं में समझा जा सकता है:

(क) आर्थिक (Economic) और लेखांकन (Accounting) दृष्टिकोण

1. लेखांकन लागत (Accounting Cost)

- यह वास्तविक खर्च है जो किसी वस्तु या सेवा के उत्पादन में हुआ।
- उदाहरण: कच्चा माल, मजदूरी, बिजली बिल आदि।

2. आर्थिक लागत (Economic Cost)

- इसमें केवल वास्तविक खर्च ही नहीं, बल्कि अवसर लागत (Opportunity Cost) भी शामिल होती है।
- उदाहरण: अगर आप अपनी दुकान में ₹50,000 निवेश करते हैं, और इसे बैंक में निवेश करते तो 5% ब्याज मिलता, तो यह अवसर लागत है।

(ख) स्थायी और परिवर्तनीय लागत (Fixed & Variable Cost)

1. स्थायी लागत (Fixed Cost)

- यह उत्पादन की मात्रा से स्वतंत्र होती है।
- उदाहरण: फैक्ट्री का किराया, प्रबंधन कर्मचारियों की तनख्वाह।

2. परिवर्तनीय लागत (Variable Cost)

- यह उत्पादन की मात्रा के अनुसार बदलती है।
- उदाहरण: कच्चा माल, मजदूरी (यदि मजदूरी उत्पादन के अनुसार दी जाती है), बिजली का खर्च।

(ग) अवसर लागत (Opportunity Cost)

- यह वह लागत है जो किसी विकल्प को चुनने के कारण त्यागनी पड़ती है।
- उदाहरण: यदि आपने जमीन पर घर बनाने का फैसला किया और इसे बेचने का मौका छोड़ दिया, तो बेचने से मिलने वाला लाभ अवसर लागत कहलाएगा।

(घ) अन्य प्रकार के लागत

1. सपोर्टिंग लागत (Sunk Cost)
 - पहले ही खर्च हो चुका और भविष्य में वापस नहीं मिलने वाला खर्च।
 - उदाहरण: पुरानी मशीन की खरीद पर खर्च।
2. मूल्य लागत (Prime Cost)
 - उत्पादन की मुख्य लागत, जैसे कच्चा माल और सीधे मजदूरी।
3. उपयोगी लागत (Useful Cost / Relevant Cost)
 - निर्णय लेने में उपयोगी लागत, जो भविष्य में बदल सकती है।

3. लागत की विशेषताएँ (Characteristics of Cost)

1. लागत हमेशा उत्पादन या सेवा से जुड़ी होती है।
2. लागत को मापना और मूल्यांकन करना आसान या कठिन हो सकता है।
3. लागत निर्णय निर्माण, मूल्य निर्धारण और लाभ की गणना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
4. लागत समय, स्थिति और विकल्पों के अनुसार बदल सकती है।

“लागत का महत्व

1. लागत का अर्थ

जैसा कि पहले बताया गया, लागत वह धनराशि है जो किसी वस्तु या सेवा को उत्पादन, क्रय या उपलब्ध कराने में खर्च होती है।

2. लागत का महत्व (Importance of Cost)

(क) मूल्य निर्धारण में सहायक (Pricing Decision)

- किसी वस्तु या सेवा का मूल्य तय करने के लिए लागत की जानकारी जरूरी है।
- उदाहरण: यदि कुर्सी बनाने की कुल लागत ₹800 है, तो इसे लाभ जोड़कर ही बिक्री मूल्य तय किया जाएगा।

(ख) लाभ निर्धारण (Profit Planning)

- लागत का ज्ञान व्यवसाय को लाभ बढ़ाने और हानि कम करने में मदद करता है।
- यदि लागत अधिक है तो लाभ कम होगा, इसलिए लागत को नियंत्रित करना लाभ बढ़ाने की कुंजी है।

(ग) नियंत्रण और बचत (Cost Control and Cost Reduction)

- लागत का विश्लेषण करके गैर-जरूरी खर्च कम किए जा सकते हैं।
- उदाहरण: कच्चे माल का सही प्रबंधन, ऊर्जा बचत, या उत्पादन प्रक्रिया में सुधार।

(घ) निर्णय लेने में सहायक (Decision Making)

- व्यवसाय के संचालन, निवेश और उत्पादन से जुड़े फैसलों में लागत का अध्ययन जरूरी है।
- उदाहरण: कौन सी मशीन लगानी है, कितनी उत्पादन क्षमता रखनी है, किस उत्पाद पर ध्यान देना है।

(ङ) आर्थिक योजना और बजटिंग (Financial Planning and Budgeting)

- लागत का अध्ययन भविष्य की योजना और बजट बनाने में मदद करता है।
- यह संसाधनों के उचित वितरण और व्यय नियंत्रण में सहायक होता है।

(च) स्पर्धा में सफलता (Competitive Advantage)

- लागत का कुशल प्रबंधन व्यवसाय को प्रतियोगियों के मुकाबले मजबूत बनाता है।
- कम लागत पर समान गुणवत्ता का उत्पादन करने से बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़ती है।

(छ) नवीन निवेश का मार्गदर्शन (Investment Decisions)

- व्यवसाय यह तय करने में सक्षम होता है कि कौन से प्रोजेक्ट में निवेश करना लाभकारी होगा।
- उदाहरण: किसी नई मशीन या उत्पादन लाइन में निवेश करने से होने वाले संभावित लाभ और लागत की तुलना।

“सामग्री लागत लेखांकन

1. सामग्री लागत (Material Cost) क्या है?

सामग्री लागत वह लागत है जो किसी उत्पाद के निर्माण में इस्तेमाल होने वाले कच्चे माल और सहायक सामग्री पर खर्च होती है।

उदाहरण:

- लोहे की प्लेट, लकड़ी, प्लास्टिक, पेंट आदि।

सामग्री लागत को मुख्य रूप से दो भागों में बांटा जा सकता है:

1. **मुख्य सामग्री (Direct Material):** जो सीधे उत्पादन में जाती है।
 - उदाहरण: कुर्सी में लकड़ी, पेंट
2. **सहायक सामग्री (Indirect Material):** जो उत्पादन में सहायक होती है लेकिन सीधे उत्पाद में नहीं जाती।
 - उदाहरण: मशीन के तेल, सफाई सामग्री

2. सामग्री लागत लेखांकन (Material Cost Accounting) का उद्देश्य

सामग्री लागत लेखांकन का मुख्य उद्देश्य है सामग्री की खरीद, उपयोग और बचत पर नियंत्रण रखना। यह लागत प्रबंधन और लाभ बढ़ाने के लिए बेहद जरूरी है।

3. सामग्री लागत लेखांकन की प्रक्रिया

(क) सामग्री की खरीद (Purchase of Material)

- सामग्री को खरीदने पर उसका मूल्य (Cost) रिकॉर्ड किया जाता है।
- इसमें खरीद मूल्य, परिवहन, भंडारण शुल्क आदि शामिल होते हैं।

उदाहरण:

- 100 किलो लकड़ी @ ₹50 प्रति किलो = ₹5000
- परिवहन और भंडारण = ₹500
- कुल सामग्री लागत = ₹5500

(ख) सामग्री की प्राप्ति और स्टॉक (Material Receipt and Stock)

- सामग्री गोदाम में आती है और उसका स्टॉक रजिस्टर में दर्ज किया जाता है।
- इसमें प्रत्येक सामग्री की मात्रा, मूल्य और प्राप्ति की तारीख लिखी जाती है।

(ग) सामग्री का उपयोग (Material Issue)

- उत्पादन के लिए सामग्री को वर्कशॉप या उत्पादन विभाग में जारी किया जाता है।
- इसका मूल्यांकन फर्स्ट इन फर्स्ट आउट (FIFO) या वेटेड एवरेज (Weighted Average) तरीके से किया जा सकता है।

(घ) सामग्री की लागत रिकॉर्ड करना (Recording Material Cost)

- हर सामग्री का खर्च विभिन्न खातों में दर्ज किया जाता है:
 1. कच्चा माल खाता (Raw Material Account) – खरीद और स्टॉक के लिए
 2. सामग्री जारी खाता (Material Issue Account) – उत्पादन में उपयोग के लिए
 3. उपयोग खाता (Consumption Account) – वास्तविक लागत की गणना

(ङ) सामग्री लागत नियंत्रण (Material Cost Control)

- लेखांकन के जरिए यह देखा जाता है कि सामग्री की बर्बादी, चोरी या अधिशेष स्टॉक कम से कम हो।
- इसके लिए निम्नलिखित उपाय होते हैं:
 1. स्टॉक ऑडिट
 2. मानक लागत (Standard Cost) बनाना
 3. लागत और वास्तविक उपयोग की तुलना

“सामग्री निर्गम के मूल्यांकन की विधियाँ”

1. सामग्री निर्गम का मूल्यांकन (Valuation of Material Issue)

क्या है?

सामग्री निर्गम का मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिसमें यह तय किया जाता है कि उत्पादन में जारी की गई सामग्री का मूल्य कितना होगा।

उद्देश्य:

- उत्पादन लागत का सही निर्धारण
- लागत नियंत्रण
- स्टॉक प्रबंधन

2. सामग्री निर्गम मूल्यांकन की प्रमुख विधियाँ

सामग्री निर्गम मूल्यांकन के लिए मुख्य रूप से तीन विधियाँ प्रचलित हैं:

(क) फर्स्ट इन फर्स्ट आउट (FIFO - First In First Out)

- इस विधि में सबसे पहले खरीदी गई सामग्री सबसे पहले उपयोग की जाती है।
- मूल्यांकन इस आधार पर किया जाता है कि पुरानी सामग्री का मूल्य पहले लिया जाएगा।

उदाहरण:

- 100 किलो लकड़ी @ ₹50 = ₹5000 (पहली खरीद)
- 200 किलो लकड़ी @ ₹60 = ₹12000 (दूसरी खरीद)
- उत्पादन में 150 किलो लकड़ी उपयोग होती है → मूल्यांकन:
 - 100 किलो @ ₹50 = ₹5000
 - 50 किलो @ ₹60 = ₹3000
 - कुल मूल्य = ₹8000

लाभ: पुरानी कीमत का उपयोग होता है, स्टॉक की वास्तविक प्रवाह दर को दर्शाता है।

(ख) लास्ट इन फर्स्ट आउट (LIFO - Last In First Out)

- इस विधि में सबसे हाल में खरीदी गई सामग्री पहले उपयोग की जाती है।
- मूल्यांकन इस आधार पर किया जाता है कि नई सामग्री का मूल्य पहले लिया जाएगा।

उदाहरण:

- उपरोक्त उदाहरण में 150 किलो लकड़ी का उपयोग → मूल्यांकन:
 - 150 किलो @ ₹60 = ₹9000

लाभ: कीमतों में तेजी से बदलाव होने पर लागत अधिक दिखाई देती है, जिससे लाभ कम दिखाई देता है।

(ग) वेटेड एवरेज (Weighted Average Method)

- इस विधि में सभी उपलब्ध सामग्री का औसत मूल्य निकाला जाता है।
- औसत मूल्य = कुल मूल्य ÷ कुल मात्रा

उदाहरण:

- कुल मात्रा = 100 + 200 = 300 किलो
- कुल मूल्य = ₹5000 + ₹12000 = ₹17000
- औसत मूल्य = ₹17000 ÷ 300 किलो = ₹56.67 प्रति किलो
- 150 किलो लकड़ी का मूल्य = 150 × ₹56.67 ≈ ₹8500

लाभ: कीमतों में उतार-चढ़ाव होने पर समान वितरण; सरल और नियमित मूल्यांकन।

(घ) विशेष कीमत विधि (Specific Identification Method)

- इस विधि में प्रत्येक सामग्री की वास्तविक खरीद मूल्य उसके उपयोग के समय पर सीधे लिया जाता है।
- यह विशेष रूप से महंगी या अलग-अलग मूल्य वाली सामग्री के लिए उपयुक्त है।

उदाहरण:

- यदि कोई मशीन के पार्ट या विशेष सामग्री है जिसकी कीमत अलग-अलग है, तो उसका वास्तविक खर्च रिकॉर्ड किया जाएगा।

सामग्री निर्गम का मूल्यांकन उत्पादन लागत, लाभ और स्टॉक नियंत्रण के लिए महत्वपूर्ण है।

- **FIFO:** पुरानी सामग्री पहले खर्च, सही स्टॉक लागत
- **LIFO:** नई सामग्री पहले खर्च, मूल्य तेजी से बढ़ने पर लाभ कम दिखाना
- **Weighted Average:** औसत मूल्य, सरल और नियमित
- **Specific Identification:** वास्तविक लागत पर आधारित, महंगी सामग्री के लिए

“सामग्री नियंत्रण की अवधारणा और तकनीकें”

1. सामग्री नियंत्रण की अवधारणा (Concept of Material Control)

सामग्री नियंत्रण का अर्थ है:

किसी भी उद्योग या व्यवसाय में कच्चे माल, सहायक सामग्री और स्टॉक का ऐसा प्रबंधन और निगरानी करना जिससे आवश्यक मात्रा में सामग्री समय पर उपलब्ध हो, लागत न्यूनतम रहे और बर्बादी या चोरी न हो।

उद्देश्य:

1. उत्पादन में समय पर सामग्री उपलब्ध कराना।

2. स्टॉक का उचित स्तर बनाए रखना।
3. सामग्री की बर्बादी, चोरी और अधिशेष स्टॉक से बचाव।
4. लागत नियंत्रण और लाभ सुनिश्चित करना।

2. सामग्री नियंत्रण की तकनीकें (Techniques of Material Control)

सामग्री नियंत्रण के लिए कई तकनीकें अपनाई जाती हैं, जो इस प्रकार हैं:

(क) स्टॉक स्तर का नियंत्रण (Inventory Level Control)

- **सुरक्षा स्टॉक (Safety Stock):** अनिश्चितताओं को ध्यान में रखते हुए न्यूनतम स्टॉक रखा जाता है।
- **आधिकारिक स्टॉक (Reorder Level):** जब स्टॉक इस स्तर तक पहुँचता है, तो पुनः खरीद आदेश दिया जाता है।
- **अधिकतम और न्यूनतम स्टॉक स्तर (Maximum & Minimum Stock Level):** स्टॉक का संतुलन बनाए रखना।

(ख) स्टोर की व्यवस्था और रिकॉर्डिंग (Store Organization and Recording)

- स्टोर रूम का व्यवस्थित प्रबंधन: सामग्री को वर्गीकृत और लेबल करना।
- स्टॉक रजिस्टर और रिकॉर्ड: सामग्री की प्राप्ति, उपयोग और शेष मात्रा का नियमित लेखा-जोखा।

(ग) मूल्यांकन और लेखांकन (Valuation and Accounting)

- सामग्री का मूल्यांकन उचित विधियों से किया जाना चाहिए (FIFO, LIFO, Weighted Average)।
- नियमित लेखांकन से यह पता चलता है कि सामग्री की बर्बादी या चोरी कहाँ हो रही है।

(घ) लेखा परीक्षा और ऑडिट (Periodic Audit)

- स्टॉक की साप्ताहिक/मासिक जांच।
- वास्तविक स्टॉक की तुलना रिकॉर्डेड स्टॉक से।

- किसी भी गड़बड़ी की पहचान करना और सुधार करना।

(ड) तकनीकी सहायता (Use of Technology)

- ERP और स्टॉक मैनेजमेंट सिस्टम का उपयोग।
- बारकोड और QR कोड आधारित ट्रैकिंग।
- स्वचालित अलर्ट सिस्टम जब स्टॉक न्यूनतम स्तर तक पहुँचता है।

(च) सामग्री की समीक्षा और रिपोर्टिंग (Material Review and Reporting)

- नियमित रिपोर्ट तैयार करना: कौन सी सामग्री ज्यादा खर्च हो रही है, कौन सी बची हुई है।
- लागत में बचत के लिए प्रबंधन को रिपोर्ट देना।

“श्रम लागत लेखांकन

1. श्रम लागत (Labor Cost) क्या है?

श्रम लागत वह धनराशि है जो किसी उत्पाद या सेवा के निर्माण में मजदूरों, कर्मचारियों और प्रबंधन कर्मचारियों को भुगतान करने के लिए खर्च होती है।

श्रम लागत में शामिल:

1. **प्रत्यक्ष मजदूरी (Direct Wages):** उत्पादन से सीधे जुड़ी मजदूरी।
 - उदाहरण: मशीन ऑपरेटर, कारपेंटर आदि।
2. **अप्रत्यक्ष मजदूरी (Indirect Wages):** उत्पादन से सीधे जुड़ी नहीं, परंतु समर्थन कार्य के लिए।
 - उदाहरण: स्टोर कर्मी, निरीक्षक, सुरक्षा कर्मचारी।
3. **अतिरिक्त लाभ (Fringe Benefits):** बोनस, भत्ते, पेंशन, बीमा आदि।

2. श्रम लागत लेखांकन (Labor Cost Accounting) का उद्देश्य

1. उत्पादन लागत का सही निर्धारण।

2. श्रम की कार्यक्षमता और उत्पादकता का मूल्यांकन।
3. श्रम लागत पर नियंत्रण और अनावश्यक खर्च कम करना।
4. भविष्य की योजना और बजट बनाने में मदद।

3. श्रम लागत लेखांकन की प्रक्रिया

(क) मजदूरी की गणना (Calculation of Wages)

श्रम लागत में सबसे पहला चरण है मजदूरी की गणना। इसके लिए मुख्य तरीके:

1. **टाइम-रेट (Time Rate):** समय के अनुसार मजदूर को भुगतान।
 - उदाहरण: ₹200/दिन × 25 दिन = ₹5000
2. **प्रोडक्शन-रेट (Piece Rate):** उत्पाद की संख्या या मात्रा के अनुसार भुगतान।
 - उदाहरण: ₹50 प्रति कुर्सी × 100 कुर्सी = ₹5000

(ख) प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष मजदूरी का वर्गीकरण (Classification of Labor)

- **प्रत्यक्ष मजदूरी:** सीधे उत्पादन में लगने वाला श्रम।
- **अप्रत्यक्ष मजदूरी:** उत्पादन में सीधे नहीं, पर समर्थन कार्य में।

(ग) श्रम लागत का रिकॉर्डिंग (Recording Labor Cost)

- मजदूरी रजिस्टर में समय, काम और भुगतान दर्ज करना।
- प्रत्यक्ष मजदूरी को उत्पादन लागत में जोड़ा जाता है।
- अप्रत्यक्ष मजदूरी को ओवरहेड (Overhead) में शामिल किया जाता है।

(घ) श्रम लागत नियंत्रण (Labor Cost Control)

1. **मानक मजदूरी (Standard Wages):** निर्धारित मानक अनुसार मजदूरी खर्च की तुलना।
2. **कार्यक्षमता रिपोर्ट (Performance Report):** मजदूर की उत्पादकता की जांच।
3. **अनावश्यक खर्च रोकना:** अवकाश, ओवरटाइम या बर्बादी की निगरानी।

“मजदूरी भुगतान की पद्धतियाँ

1. मजदूरी भुगतान का अर्थ (Meaning of Wage Payment)

मजदूरी भुगतान का मतलब है मजदूरों या कर्मचारियों को उनके श्रम या काम के अनुसार वित्तीय रूप से भुगतान करना।

सही पद्धति का चयन करने से श्रम उत्पादकता, कार्य प्रोत्साहन और लागत नियंत्रण में मदद मिलती है।

2. मजदूरी भुगतान की मुख्य पद्धतियाँ (Methods of Wage Payment)

(क) समय आधारित मजदूरी (Time Rate Wage System)

- इस पद्धति में मजदूरी काम में लगाए गए समय (घंटे, दिन, सप्ताह या माह) के आधार पर तय की जाती है।
- सुविधा: सरल और प्रबंधनीय।
- असुविधा: मेहनत और उत्पादकता पर ध्यान नहीं देता।

उदाहरण: ₹200/दिन × 25 दिन = ₹5000

(ख) टुकड़ा आधारित मजदूरी (Piece Rate Wage System)

- इस पद्धति में मजदूरी निर्मित या पूर्ण किए गए यूनिट के अनुसार दी जाती है।
- सुविधा: उत्पादकता बढ़ाने में मदद करता है।
- असुविधा: गुणवत्ता पर निगरानी की आवश्यकता होती है।

उदाहरण: ₹50 प्रति कुर्सी × 100 कुर्सी = ₹5000

टुकड़ा आधारित मजदूरी के प्रकार:

1. सिंपल रेट (Simple Piece Rate): तय दर × संख्या
2. प्रतिशत बोनस विधि (Differential Piece Rate): निर्धारित उत्पादन सीमा से अधिक उत्पादन पर उच्च दर

(ग) मिश्रित पद्धति (Combination System / Time-Cum-Piece Rate)

- इसमें समय और टुकड़ा दोनों के आधार पर भुगतान किया जाता है।
- उदाहरण: न्यूनतम समय-आधारित मजदूरी + अतिरिक्त यूनिट के लिए टुकड़ा दर।
- सुविधा: न्यूनतम सुरक्षा और उत्पादकता प्रोत्साहन दोनों।

(घ) उत्पादन आधारित मजदूरी (Incentive or Bonus System)

- अतिरिक्त उत्पादकता, गुणवत्ता या समय पर कार्य करने के लिए बोनस या प्रोत्साहन दिया जाता है।
- उदाहरण: लक्ष्य उत्पादन पूरा करने पर 10% बोनस।
- सुविधा: श्रमिकों को प्रेरित करता है।

(ङ) अप्रत्यक्ष मजदूरी (Indirect Labor / Salary System)

- यह उन कर्मचारियों की मजदूरी होती है जो सीधे उत्पादन से जुड़े नहीं हैं।
- जैसे: स्टोरकिपर, निरीक्षक, सुरक्षा कर्मी।
- सामान्यतः समान वेतन (Salary) दिया जाता है।

मजदूरी भुगतान की पद्धति का चयन इस बात पर निर्भर करता है कि:

- उत्पादन की प्रकृति क्या है (यूनिट आधारित या समय आधारित)
- मजदूर की उत्पादकता और गुणवत्ता को प्रोत्साहित करना है या नहीं
- लागत और बजट नियंत्रण की आवश्यकता कितनी है

सारांश:

पद्धति	आधार	लाभ	हानि
समय आधारित	समय	सरल, स्थिर	उत्पादकता कम
टुकड़ा आधारित	उत्पादन	उत्पादकता बढ़ाता	गुणवत्ता जोखिम
मिश्रित	समय + उत्पादन	सुरक्षा + प्रोत्साहन	जटिल लेखांकन
बोनस / Incentive	उत्पादन/गुणवत्ता	प्रेरणा	लागत में उतार-चढ़ाव
अप्रत्यक्ष मजदूरी	समय/सेवा	स्थिर, सरल	उत्पादकता प्रभावित नहीं

Unit -2

“इकाई लागत लेखांकन

1. इकाई लागत (Unit Cost) क्या है?

इकाई लागत वह कुल लागत है जो किसी उत्पाद की एक इकाई को बनाने में खर्च होती है। इसे इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है:

इकाई लागत = कुल लागत ÷ उत्पादन की कुल इकाइयाँ

उदाहरण:

- यदि कुल उत्पादन लागत = ₹50,000 और कुल उत्पादन इकाई = 1,000
- तो इकाई लागत = ₹50,000 ÷ 1,000 = ₹50 प्रति इकाई

2. इकाई लागत का महत्व (Importance of Unit Cost)

1. मूल्य निर्धारण (Pricing Decision):
 - सही मूल्य तय करने के लिए प्रत्येक इकाई की लागत जानना आवश्यक है।
2. लाभ निर्धारण (Profit Planning):
 - बिक्री मूल्य और इकाई लागत के अंतर से लाभ की गणना होती है।
3. लागत नियंत्रण (Cost Control):
 - उत्पादन प्रक्रिया में खर्च की निगरानी में मदद करता है।
4. वित्तीय निर्णय (Financial Decisions):
 - उत्पादन बढ़ाने या घटाने, नई मशीन लगाने आदि निर्णय में सहायक।

3. इकाई लागत का लेखांकन (Unit Cost Accounting)

(क) लागत घटक (Components of Unit Cost)

इकाई लागत में तीन मुख्य घटक शामिल होते हैं:

1. सामग्री लागत (Material Cost)
 - प्रत्यक्ष कच्चा माल और सहायक सामग्री

2. श्रम लागत (Labor Cost)

- प्रत्यक्ष मजदूरी और अप्रत्यक्ष मजदूरी

3. ओवरहेड लागत (Overhead Cost)

- अप्रत्यक्ष खर्च जैसे बिजली, मशीन मेंटेनेंस, प्रशासनिक खर्च

सूत्र:

इकाई लागत = सामग्री + श्रम + ओवरहेड / उत्पाद की संख्या
$$\text{इकाई लागत} = \frac{\text{सामग्री} + \text{श्रम} + \text{ओवरहेड}}{\text{उत्पाद की संख्या}}$$

(ख) उदाहरण (Example)

- प्रत्यक्ष सामग्री = ₹30,000
- प्रत्यक्ष श्रम = ₹10,000
- ओवरहेड = ₹10,000
- कुल उत्पादन = 1,000 इकाइयाँ

इकाई लागत = $\frac{30,000 + 10,000 + 10,000}{1,000} = ₹50$ प्रति इकाई
$$\text{इकाई लागत} = \frac{30,000 + 10,000 + 10,000}{1,000} = ₹50 \text{ प्रति इकाई}$$

(ग) इकाई लागत का उपयोग (Uses of Unit Cost)

1. मूल्य निर्धारण
2. लाभ और हानि का विश्लेषण
3. उत्पादन प्रक्रिया में सुधार
4. लागत बचत के अवसर पहचानना
5. प्रबंधन निर्णय में सहायक

“लागत पत्र एवं लागत विवरण का निर्माण

[निविदा मूल्य की गणना]

1. लागत पत्र (Cost Sheet) क्या है?

लागत पत्र एक वित्तीय विवरण है, जिसमें किसी उत्पाद या निर्माण कार्य की कुल लागत और उसके घटक क्रमवार दर्शाए जाते हैं।

उद्देश्य:

- उत्पादन/निर्माण की वास्तविक लागत जानना
- मूल्य निर्धारण और निविदा (Tender) तैयार करना
- लागत नियंत्रण और प्रबंधन निर्णय में सहायक

2. लागत पत्र के मुख्य घटक (Components of Cost Sheet)

1. प्रत्यक्ष सामग्री लागत (Direct Material Cost)
 - कच्चा माल, सहायक सामग्री, स्टोर से निकासी
2. प्रत्यक्ष श्रम लागत (Direct Labor Cost)
 - उत्पादन से सीधे जुड़े मजदूरों का वेतन
3. प्रत्यक्ष खर्च (Direct Expenses)
 - किसी विशेष कार्य के लिए खर्च जैसे विशेष मशीन, शुल्क आदि
4. अप्रत्यक्ष सामग्री/श्रम/खर्च (Indirect Costs / Overheads)
 - उत्पादन संचालन, प्रशासन, बिजली, मशीन मेंटेनेंस आदि
5. कुल लागत (Total Cost)
 - प्रत्यक्ष + अप्रत्यक्ष लागत
6. लाभ (Profit)
 - प्रबंधन द्वारा तय प्रतिशत
7. निविदा मूल्य / बिक्री मूल्य (Tender Price / Selling Price)
 - कुल लागत + लाभ

3. लागत विवरण (Cost Statement) का निर्माण

चरण 1: प्रत्यक्ष लागत जोड़ें

- प्रत्यक्ष सामग्री + प्रत्यक्ष श्रम + प्रत्यक्ष खर्च

चरण 2: अप्रत्यक्ष लागत जोड़ें (Overhead Allocation)

- उत्पादन ओवरहेड + प्रशासनिक ओवरहेड + बिक्री और वितरण ओवरहेड

चरण 3: कुल लागत निकालें

कुल लागत = प्रत्यक्ष लागत + अप्रत्यक्ष लागत
 $\text{कुल लागत} = \text{प्रत्यक्ष लागत} + \text{अप्रत्यक्ष लागत}$

चरण 4: लाभ जोड़ें

निविदा मूल्य = कुल लागत + लाभ
 $\text{निविदा मूल्य} = \text{कुल लागत} + \text{लाभ}$

4. उदाहरण (With Tender Price Calculation)

मान लीजिए:

घटक	राशि (₹)
प्रत्यक्ष सामग्री	50,000
प्रत्यक्ष श्रम	20,000
प्रत्यक्ष खर्च	5,000
उत्पादन ओवरहेड	10,000
प्रशासनिक ओवरहेड	5,000
कुल लागत	90,000

यदि प्रबंधन लाभ = 10% तय करता है:

लाभ = $10\% \times 90,000 = 9,000$

निविदा मूल्य = $90,000 + 9,000 = 99,000$

निविदा मूल्य = $90,000 + 9,000 = 99,000$

इस प्रकार:

- कुल लागत = ₹90,000
- निविदा मूल्य = ₹99,000

“उपरीवय लेखांकन- मशीन घंटे दर की गणना”

1. उपरीवय (Overhead) क्या है?

उपरीवय या ओवरहेड वह खर्च है जो प्रत्यक्ष सामग्री और प्रत्यक्ष श्रम से सीधे संबंधित नहीं होता, लेकिन उत्पादन के लिए आवश्यक होता है।

उदाहरण:

- फैक्ट्री का किराया
- बिजली और पानी
- मशीन मेंटेनेंस
- प्रशासनिक खर्च

2. मशीन घंटे दर (Machine Hour Rate) क्या है?

मशीन घंटे दर से तात्पर्य है:

किसी मशीन के एक घंटे चलाने की कुल लागत।

यह दर यह जानने में मदद करती है कि प्रत्येक उत्पाद की मशीन लागत कितनी है।

सूत्र (Formula):

मशीन घंटे दर = $\frac{\text{मशीन से संबंधित कुल ओवरहेड लागत}}{\text{कुल मशीन घंटे}}$

मशीन घंटे दर = $\frac{\text{मशीन से संबंधित कुल ओवरहेड लागत}}{\text{कुल मशीन घंटे}}$

3. मशीन घंटे दर निकालने की प्रक्रिया (Steps)

चरण 1: मशीन से संबंधित ओवरहेड का निर्धारण

- फैक्ट्री ओवरहेड में से मशीन पर आने वाला हिस्सा अलग करें।
- इसमें शामिल हो सकते हैं:
 - मशीन डिप्रिसिएशन (Depreciation)
 - मशीन मेंटेनेंस खर्च
 - मशीन के लिए बिजली खर्च
 - मशीन ऑपरेटर की मजदूरी (यदि प्रत्यक्ष श्रम नहीं है)

चरण 2: कुल मशीन घंटे निर्धारित करें

- मशीन एक वर्ष में कुल कितने घंटे चली = सालाना उत्पादन घंटे

चरण 3: मशीन घंटे दर निकालें

मशीन घंटे दर = $\frac{\text{मशीन ओवरहेड लागत}}{\text{कुल मशीन घंटे}}$

4. उदाहरण (Example)

मान लें:

- मशीन डिप्रिसिएशन = ₹30,000
- मशीन मेंटेनेंस = ₹10,000
- बिजली खर्च = ₹5,000
- कुल मशीन ओवरहेड = ₹45,000

मशीन साल में कुल = 1,500 घंटे चली

मशीन घंटे दर = $\frac{45,000}{1,500} = ₹30$ प्रति घंटा

इसका मतलब:

- मशीन को एक घंटे चलाने की लागत = ₹30
- यदि कोई उत्पाद 10 घंटे मशीन में लगता है → मशीन लागत = $10 \times 30 = ₹300$

Unit –3

“ठेका एवं उपकारी लागत लेखांकन

1. ठेका/उपकारी लागत लेखांकन क्या है?

ठेका लागत लेखांकन (Contract / Job Costing) वह प्रक्रिया है जिसमें किसी विशेष ठेका या कार्य के लिए सभी खर्चों का लेखा-जोखा रखा जाता है।

यह ठेकेदार और प्रबंधन दोनों को कुल लागत, लाभ और मूल्य निर्धारण का सही आंकलन करने में मदद करता है।

उद्देश्य:

1. प्रत्येक ठेका/उपकारी कार्य की वास्तविक लागत ज्ञात करना।
2. लाभ और हानि का सही आंकलन करना।
3. लागत नियंत्रण और भविष्य की योजना बनाना।

2. ठेका/उपकारी लागत के घटक (Components of Contract Cost)

(क) प्रत्यक्ष लागत (Direct Cost)

- सामग्री (Materials): कच्चा माल, सीमेंट, स्टील, ईंट आदि
- श्रम (Labor): मजदूरी जो सीधे कार्य से जुड़ी हो
- प्रत्यक्ष खर्च (Direct Expenses): विशेष मशीन/उपकरण, लाइसेंस शुल्क, विशेष उपकरण किराया आदि

(ख) अप्रत्यक्ष लागत / ओवरहेड (Indirect Cost / Overhead)

- साइट/कारखाना का किराया
- मशीन मँटेनेंस, बिजली, प्रशासनिक खर्च
- पर्यवेक्षक, सुरक्षा खर्च आदि

3. ठेका लागत लेखांकन की प्रक्रिया

चरण 1: लागत का विभाजन

- प्रत्यक्ष लागत + अप्रत्यक्ष लागत

चरण 2: प्रत्येक ठेका/उपकारी कार्य के लिए रिकॉर्डिंग

- सामग्री खर्च: स्टोर से निकासी या खरीदी का विवरण
- श्रम खर्च: मजदूरी रजिस्टर और समय रिकॉर्ड
- ओवरहेड आवंटन: मशीन घंटे दर या अन्य आधार पर

चरण 3: कुल लागत निकालना

कुल ठेका लागत = प्रत्यक्ष सामग्री + प्रत्यक्ष श्रम + प्रत्यक्ष खर्च + ओवरहेड
 $\text{कुल ठेका लागत} = \text{प्रत्यक्ष सामग्री} + \text{प्रत्यक्ष श्रम} + \text{प्रत्यक्ष खर्च} + \text{ओवरहेड}$

चरण 4: लाभ जोड़ना (Tender Price / Contract Value)

- प्रबंधन द्वारा तय प्रतिशत के आधार पर लाभ जोड़ें

ठेका मूल्य / उपकारी मूल्य = कुल लागत + लाभ
 $\text{ठेका मूल्य / उपकारी मूल्य} = \text{कुल लागत} + \text{लाभ}$

4. उदाहरण (Example)

घटक राशि (₹)

प्रत्यक्ष सामग्री 1,50,000

घटक	राशि (₹)
प्रत्यक्ष श्रम	75,000
प्रत्यक्ष खर्च	25,000
ओवरहेड	50,000
कुल लागत	3,00,000

यदि प्रबंधन लाभ = 10% तय करता है:

लाभ = $10\% \times 3,00,000 = 30,000$ लाभ = $10\% \times 3,00,000 = 30,000$ लाभ = $10\% \times 3,00,000 = 30,000$
 ठेका/उपकारी मूल्य = $3,00,000 + 30,000 = 3,30,000$ ठेका / उपकारी मूल्य = $3,00,000 + 30,000 = 3,30,000$
 ठेका/उपकारी मूल्य = $3,00,000 + 30,000 = 3,30,000$

5. ठेका लागत लेखांकन का महत्व

1. सटीक लागत निर्धारण: प्रत्येक ठेका/उपकारी कार्य की वास्तविक लागत ज्ञात होती है।
2. लाभ का सही आंकलन: प्रबंधन को निर्णय लेने में मदद।
3. लागत नियंत्रण: अनावश्यक खर्च पर निगरानी।
4. निविदा मूल्य निर्धारण: ठेका बोली के लिए सही मूल्य तय करना।

“परिचालन लागत लेखांकन

1. परिचालन/परिवहन लागत लेखांकन क्या है?

परिचालन लागत लेखांकन वह प्रक्रिया है जिसमें किसी वाहन, फ्लीट, या परिवहन प्रणाली के सभी खर्चों का विश्लेषण और रिकॉर्ड रखा जाता है।

उद्देश्य:

1. प्रत्येक वाहन या ऑपरेशन की वास्तविक लागत ज्ञात करना।
2. मूल्य निर्धारण और किराया तय करने में मदद।
3. लागत नियंत्रण और संसाधन प्रबंधन।

2. परिचालन लागत के घटक (Components of Operating / Transport Cost)

(क) प्रत्यक्ष लागत (Direct Cost)

- ईंधन और तेल खर्च (Fuel & Oil)
- ड्राइवर और सहायक कर्मचारी की मजदूरी (Driver & Staff Wages)
- प्रत्यक्ष मरम्मत और मेंटेनेंस (Direct Repairs & Maintenance)

(ख) अप्रत्यक्ष लागत / ओवरहेड (Indirect / Overhead Cost)

- बीमा (Insurance)
- वाहन डिप्रिसिएशन (Depreciation)
- लाइसेंस, रोड टैक्स, पंजीकरण आदि
- प्रशासनिक खर्च

3. परिचालन लागत लेखांकन की प्रक्रिया

चरण 1: प्रत्यक्ष लागत जोड़ें

- ईंधन + ड्राइवर मजदूरी + मरम्मत

चरण 2: अप्रत्यक्ष लागत जोड़ें

- बीमा + डिप्रिसिएशन + प्रशासनिक खर्च

चरण 3: कुल परिचालन लागत निकालें

कुल परिचालन लागत = प्रत्यक्ष लागत + अप्रत्यक्ष लागत
कुल परिचालन लागत = प्रत्यक्ष लागत + अप्रत्यक्ष लागत

चरण 4: प्रति यूनिट/किलोमीटर/किमी लागत निकालें

परिवहन लागत प्रति किमी = $\frac{\text{कुल परिवचलन लागत}}{\text{कुल किलोमीटर}}$ $\text{परिवहन लागत प्रति किमी} = \frac{\text{कुल परिवचलन लागत}}{\text{कुल किलोमीटर}}$

4. उदाहरण (Example)

मान लें एक ट्रक का विवरण:

घटक	राशि (₹)
ईंधन और तेल	20,000
ड्राइवर मजदूरी	10,000
मरम्मत	5,000
बीमा	2,000
डिप्रिसिएशन	3,000
प्रशासनिक खर्च	1,000
कुल परिवचलन लागत	41,000

यदि ट्रक ने कुल 10,000 किमी यात्रा की:

परिवहन लागत प्रति किमी = $\frac{41,000}{10,000} = ₹4.1/\text{किमी}$ $\text{परिवहन लागत प्रति किमी} = \frac{41,000}{10,000} = ₹4.1 / \text{किमी}$

5. परिवचलन लागत लेखांकन का महत्व

1. सटीक लागत निर्धारण: वाहन संचालन की वास्तविक लागत ज्ञात होती है।
2. किराया और शुल्क निर्धारण: लॉजिस्टिक्स और परिवहन मूल्य तय करना।
3. लागत नियंत्रण: ईंधन, मरम्मत और ओवरहेड पर निगरानी।
4. नियोजन और बजट: संसाधनों का सही प्रबंधन।

Unit-4

“प्रक्रिया लागत लेखांकन

[अंतर-प्रक्रिया लाभ और संचय]

1. प्रक्रिया लागत लेखांकन क्या है?

प्रक्रिया लागत लेखांकन (Process Costing) उस प्रणाली को कहते हैं जिसमें उत्पादन कई प्रक्रियाओं (Processes / Departments) से होकर गुजरता है, और प्रत्येक प्रक्रिया में लागत का विश्लेषण किया जाता है।

उद्देश्य:

1. प्रत्येक प्रक्रिया की लागत और उत्पादन मूल्य ज्ञात करना।
2. अंतर-प्रक्रिया लाभ और लागत संचय का निर्धारण करना।
3. मूल्य निर्धारण, लागत नियंत्रण और प्रबंधन निर्णय में मदद।

2. प्रक्रिया लागत के घटक (Components of Process Costing)

(क) प्रत्यक्ष लागत (Direct Cost)

- सामग्री लागत (Direct Material Cost)
- श्रम लागत (Direct Labor Cost)
- विशेष खर्च (Direct Expenses)

(ख) अप्रत्यक्ष लागत / ओवरहेड (Overhead)

- उत्पादन ओवरहेड
- प्रशासनिक ओवरहेड

(ग) अंतर-प्रक्रिया लाभ (Inter-Process Profit)

- जब किसी प्रक्रिया का आउटपुट अगली प्रक्रिया को बेचा जाता है, तो उसमें लाभ का जोड़ किया जाता है।

(घ) संचय / स्टॉक (Stock / Closing Inventory)

- किसी प्रक्रिया में अधूरा उत्पादन (Work in Progress - WIP) को संचय / स्टॉक के रूप में अंकित किया जाता है।

3. प्रक्रिया लागत लेखांकन की प्रक्रिया

चरण 1: प्रत्येक प्रक्रिया की लागत निर्धारित करना

- प्रत्यक्ष सामग्री + प्रत्यक्ष श्रम + प्रत्यक्ष खर्च + ओवरहेड

चरण 2: अंतर-प्रक्रिया लाभ जोड़ना

अगली प्रक्रिया में मूल्य=इस प्रक्रिया की लागत+लाभ प्रतिशत\text{अगली प्रक्रिया में मूल्य} = \text{इस प्रक्रिया की लागत} + \text{लाभ प्रतिशत}\text{अगली प्रक्रिया में मूल्य=इस प्रक्रिया की लागत+लाभ प्रतिशत}

चरण 3: संचय/अधूरी उत्पादन का मूल्यांकन

- अधूरी उत्पादन लागत की गणना करें और स्टॉक में दिखाएँ।

चरण 4: अंतिम उत्पाद की लागत निकालना

- सभी प्रक्रियाओं की लागत + अंतर-प्रक्रिया लाभ - अंत स्टॉक

4. उदाहरण (Example)

मान लें:

प्रक्रिया A

घटक	राशि (₹)
सामग्री	50,000
श्रम	20,000

घटक राशि (₹)

ओवरहेड 10,000

कुल लागत 80,000

- अंतर-प्रक्रिया लाभ = 10%

अगली प्रक्रिया में मूल्य = $80,000 + 10\% \times 80,000 = 88,000$
अगली प्रक्रिया में मूल्य = $80,000 + 10\% \times 80,000 = 88,000$

प्रक्रिया B

- प्रक्रिया A से लागत = 88,000
- नई सामग्री = 30,000
- श्रम = 10,000
- ओवरहेड = 5,000

कुल लागत = $88,000 + 30,000 + 10,000 + 5,000 = 1,33,000$
कुल लागत = $88,000 + 30,000 + 10,000 + 5,000 = 1,33,000$

- यदि अधूरी उत्पादन (Closing Stock) = 33,000

अंतिम उत्पादन लागत = $1,33,000 - 33,000 = 1,00,000$
अंतिम उत्पादन लागत = $1,33,000 - 33,000 = 1,00,000$

5. प्रक्रिया लागत लेखांकन का महत्व

1. प्रत्येक प्रक्रिया की लागत नियंत्रण
2. अंतर-प्रक्रिया लाभ का सही निर्धारण
3. अधूरी उत्पादन का मूल्यांकन और संचय
4. मूल्य निर्धारण और प्रबंधन निर्णय में मदद

“लागत लेखा और वित्तीय लेखा का संबंध

1. लागत लेखा और वित्तीय लेखा का परिचय

विशेषता	लागत लेखा (Cost Accounting)	वित्तीय लेखा (Financial Accounting)
उद्देश्य	उत्पादन/सेवा की वास्तविक लागत ज्ञात करना और लागत नियंत्रण	कंपनी की समग्र वित्तीय स्थिति और लाभ-हानि का आकलन करना
उपयोगकर्ता प्रबंधन (Internal Use)		बाहरी उपयोगकर्ता जैसे निवेशक, बैंक, सरकार (External Use)
समयावधि	वास्तविक समय / प्रोजेक्ट या अवधि अनुसार	नियमित अंतराल (मासिक, त्रैमासिक, वार्षिक)
रिपोर्ट	लागत रिपोर्ट, प्रक्रिया/उत्पाद लागत विवरण	बैलेंस शीट, लाभ-हानि खाता, वित्तीय विवरण
ध्यान केंद्र	उत्पादन लागत, विभागीय लागत, सामग्री, श्रम, ओवरहेड	कुल आय, व्यय, संपत्ति, देनदारियाँ, लाभ/हानि

2. लागत लेखा और वित्तीय लेखा में मेल (Points of Intersection)

- सामग्री और श्रम की लागत**
 - लागत लेखा में: प्रत्येक उत्पाद, ठेका या प्रक्रिया की लागत का विवरण।
 - वित्तीय लेखा में: कुल सामग्री और श्रम खर्च, खर्च खाता में दिखाई देता है।
- ओवरहेड खर्च**
 - लागत लेखा: मशीन घंटे, विभाग या प्रक्रिया के अनुसार ओवरहेड आवंटित।
 - वित्तीय लेखा: कुल ओवरहेड खर्च, आम खर्च खाता में दर्शाया।
- स्टॉक / अधूरी उत्पादन (Inventory / WIP)**
 - लागत लेखा: अधूरी उत्पादन की लागत और मूल्यांकन।
 - वित्तीय लेखा: बैलेंस शीट में इन्वेंट्री के रूप में दिखाया।
- लाभ / हानि**
 - लागत लेखा: उत्पाद/प्रक्रिया/ठेका अनुसार लाभ का विश्लेषण।
 - वित्तीय लेखा: कुल लाभ या हानि, लाभ-हानि खाता में।
- डेटा स्रोत**

- लागत लेखा और वित्तीय लेखा अक्सर समान मूलभूत डेटा (Material Issue, Labor Payment, Expenses) का उपयोग करते हैं।

3. सारांश

- लागत लेखा प्रबंधन को निर्णय लेने और लागत नियंत्रित करने में मदद करता है।
- वित्तीय लेखा बाहरी और आंतरिक उपयोगकर्ताओं को कंपनी की समग्र वित्तीय स्थिति बताता है।
- दोनों का सामान्य आधार: खर्चों और स्टॉक के आंकड़े।
- कुल मिलाकर: लागत लेखा वित्तीय लेखा का सपोर्टिंग टूल है।

UNIT-5

“सीमान्त लागत लेखांकन और लाभ मात्र अनुपात

1. सीमांत लागत लेखांकन क्या है?

सीमान्त लागत लेखांकन (Marginal Costing / Variable Costing) वह प्रणाली है जिसमें केवल परिवर्तनीय लागत (Variable Costs) को उत्पाद लागत में शामिल किया जाता है, और स्थिर लागत (Fixed Costs) को अवधि के खर्च के रूप में देखा जाता है।

मुख्य उद्देश्य:

1. लाभ का विश्लेषण
2. उत्पादन और बिक्री स्तर के आधार पर निर्णय लेना
3. लागत-लाभ संबंध का अध्ययन

2. मुख्य तत्व (Components)

1. परिवर्तनीय लागत (Variable Costs):
 - कच्चा माल, प्रत्यक्ष श्रम, ऊर्जा खर्च, परिवहन खर्च आदि
 - उत्पादन मात्रा के साथ बढ़ते या घटते हैं

2. स्थिर लागत (Fixed Costs):

- प्रशासनिक खर्च, किराया, बीमा, वेतन आदि
- उत्पादन स्तर बदलने पर स्थिर रहते हैं

3. सीमान्त लागत (Marginal Cost)

सीमान्त लागत = कुल लागत - स्थिर लागत
 $\text{सीमान्त लागत} = \text{कुल लागत} - \text{स्थिर लागत}$

या केवल परिवर्तनीय लागत के बराबर होती है।

3. लाभ मात्र अनुपात (Profit-Volume Ratio / P/V Ratio)

परिभाषा:

- यह अनुपात दर्शाता है कि प्रत्येक रुपये की बिक्री में कितना प्रतिशत अतिरिक्त लाभ (Contribution) के रूप में प्राप्त होता है।

$\text{P/V Ratio (\%)} = \frac{\text{Contribution}}{\text{Sales}} \times 100$
 $\text{P/V Ratio (\%)} = \frac{\text{Sales} - \text{Variable Costs}}{\text{Sales}} \times 100$

जहाँ:

$\text{Contribution} = \text{Sales} - \text{Variable Costs}$
 $\text{Contribution} = \text{Sales} - \text{Variable Costs}$

4. P/V Ratio का उपयोग

1. सुरक्षा मार्जिन (Margin of Safety) निकालना
2. लाभ लक्ष्यों की गणना
3. बेचने के मूल्य और उत्पादन निर्णय में मदद
4. सीमा लागत और लाभ विश्लेषण (Break-Even Analysis)

5. उदाहरण (Example)

मान लें:

विवरण	राशि (₹)
बिक्री (Sales)	1,00,000
परिवर्तनीय लागत (Variable Cost)	60,000
स्थिर लागत (Fixed Cost)	25,000

Contribution (अतिरिक्त लाभ)

$$=1,00,000-60,000=40,000=1,00,000 - 60,000 = 40,000=1,00,000-60,000=40,000$$

P/V Ratio

$$=40,000/1,00,000 \times 100 = 40\% = \frac{40,000}{1,00,000} \times 100 = 40\% = 40,000/1,00,000 \times 100 = 40\%$$

लाभ (Profit)

$$=Contribution-FixedCost=40,000-25,000=15,000=Contribution - Fixed Cost = 40,000 - 25,000 = 15,000=Contribution-FixedCost=40,000-25,000=15,000$$

6. सारांश

- **सीमान्त लागत लेखांकन:** केवल परिवर्तनीय लागत को ध्यान में रखता है।
- **Contribution:** बिक्री से परिवर्तनीय लागत घटाने पर प्राप्त राशि।
- **P/V Ratio:** बिक्री में से Contribution का प्रतिशत।
- **लाभ निर्धारण:** Contribution - Fixed Cost

• “संविचित बिंदु

1. संविचित बिंदु क्या है?

संविचित बिंदु (Break-even Point – BEP) वह विक्रय स्तर (Sales Volume) है जहाँ किसी व्यवसाय का कुल लाभ शून्य होता है, यानी कुल बिक्री = कुल लागत।

- इस बिंदु पर व्यवसाय ना लाभ में होता है, ना हानि में।
- इसे इंगित करने के लिए अक्सर ब्रेकेवेन चार्ट / ग्राफ का उपयोग किया जाता है।

2. BEP की विशेषताएँ

1. बिक्री और लागत बराबर होने पर होता है।
2. इस स्तर पर **Contribution = Fixed Cost**।
3. BEP तक कोई शुद्ध लाभ नहीं, BEP के ऊपर लाभ, BEP के नीचे हानि।

3. BEP निकालने का सूत्र

(क) मात्रा के आधार पर (Units)

$$\text{BEP (Units)} = \frac{\text{Fixed Costs}}{\text{Selling Price per Unit} - \text{Variable Cost per Unit}}$$
$$\text{BEP (Units)} = \frac{\text{Fixed Costs}}{\text{Selling Price per Unit} - \text{Variable Cost per Unit}}$$

जहाँ:

- Fixed Costs = स्थिर लागत
- Selling Price per Unit = प्रति इकाई विक्रय मूल्य
- Variable Cost per Unit = प्रति इकाई परिवर्तनीय लागत

(ख) मूल्य के आधार पर (Sales Value / Revenue)

$$\text{BEP (₹)} = \frac{\text{Fixed Costs}}{\text{P/V Ratio}}$$
$$\text{BEP (₹)} = \frac{\text{Fixed Costs}}{\text{P/V Ratio}}$$

- P/V Ratio = Contribution / Sales × 100

4. उदाहरण (Example)

मान लें:

विवरण	राशि (₹)
बिक्री मूल्य प्रति यूनिट	100
परिवर्तनीय लागत प्रति यूनिट	60
स्थिर लागत	40,000

(क) BEP (Units)

$$\text{BEP (Units)} = \frac{40,000}{100 - 60} = \frac{40,000}{40} = 1,000 \text{ Units}$$

(ख) BEP (Sales Value)

$$\begin{aligned} \text{Contribution per Unit} &= 100 - 60 = 40 \\ \text{Total Contribution at BEP} &= \text{Fixed Cost} = 40,000 \end{aligned}$$

$$\begin{aligned} \text{BEP Sales Value} &= 1,000 \times 100 = 1,00,000 \text{ ₹} \\ \text{BEP Sales Value} &= 1,000 \times 100 = 1,00,000 \text{ ₹} \end{aligned}$$

इसका मतलब है कि 1,000 यूनिट बेचने पर व्यवसाय neither लाभ में होगा, ना हानि में।

5. BEP का महत्व

1. लाभ और हानि के स्तर को समझना
2. बिक्री लक्ष्य निर्धारित करना
3. लागत और मूल्य निर्धारण का निर्णय
4. निवेश और उत्पादन की योजना

“सुरक्षा सीमा

1. सुरक्षा सीमा क्या है?

सुरक्षा सीमा (Margin of Safety - MOS) वह विक्रय या उत्पादन की अतिरिक्त मात्रा या राशि है जो ब्रेकेवेन प्वाइंट (BEP) से ऊपर है, और जिसके लिए कंपनी हानि की स्थिति में नहीं आती।

- सरल शब्दों में: यह बताती है कि कितनी बिक्री घटने पर भी कंपनी लाभ में बनी रहेगी।
- MOS जितनी अधिक, व्यवसाय उतना सुरक्षित।

2. सुरक्षा सीमा का सूत्र (Formulas)

(क) राशि के आधार पर (Sales Value)

$$\text{MOS (₹)} = \text{Actual Sales} - \text{BEP Sales}$$
$$\text{MOS (₹)} = \text{Actual Sales} - \text{BEP Sales}$$

(ख) प्रतिशत के आधार पर (Percentage of Sales)

$$\text{MOS \%} = \frac{\text{Actual Sales} - \text{BEP Sales}}{\text{Actual Sales}} \times 100$$
$$\text{MOS \%} = \frac{\text{Actual Sales} - \text{BEP Sales}}{\text{Actual Sales}} \times 100$$

3. उदाहरण (Example)

मान लें:

विवरण	राशि (₹)
वास्तविक बिक्री (Actual Sales)	1,50,000
BEP बिक्री (Break-even Sales)	1,00,000

(क) राशि के आधार पर

$$\text{MOS} = 1,50,000 - 1,00,000 = 50,000 \text{ ₹}$$
$$\text{₹MOS} = 1,50,000 - 1,00,000 = 50,000 \text{ ₹}$$

(ख) प्रतिशत के आधार पर

$$\text{MOS \%} = \frac{50,000}{1,50,000} \times 100 = 33.33\%$$
$$\text{MOS \%} = \frac{50,000}{1,50,000} \times 100 = 33.33\%$$

- मतलब: बिक्री में 33.33% की कमी आने पर भी कंपनी हानि में नहीं जाएगी।

4. सुरक्षा सीमा का महत्व

1. व्यवसाय की सुरक्षा का आकलन: कितना जोखिम है अगर बिक्री घटे।
2. लाभ सुनिश्चित करना: MOS अधिक होने पर व्यवसाय सुरक्षित।
3. निर्णय लेने में मदद: उत्पादन या बिक्री में कटौती की स्थिति में।

4. ब्रेक-ईवन विश्लेषण का पूरक: BEP के बाद व्यापारिक निर्णय।

“संविचित विश्लेषण के प्रयोग”

1. संविचित विश्लेषण क्या है?

संविचित विश्लेषण वह तकनीक है जिसमें किसी व्यवसाय की लाभ और हानि की स्थिति को बिक्री स्तर, लागत और मूल्य के आधार पर अध्ययन किया जाता है।

- इसका उद्देश्य यह जानना है कि किस बिक्री स्तर पर व्यवसाय लाभ कमाना शुरू करेगा।
- इसके माध्यम से बिक्री, लागत और लाभ के बीच संबंध का विश्लेषण किया जाता है।

2. संविचित विश्लेषण के मुख्य घटक

1. स्थिर लागत (Fixed Costs) – बिक्री स्तर पर निर्भर नहीं
2. परिवर्तनीय लागत (Variable Costs) – उत्पादन बढ़ने या घटने पर बदलती है
3. बिक्री मूल्य (Selling Price) – प्रति यूनिट विक्रय मूल्य
4. लाभ (Profit) – Contribution – Fixed Costs
5. BEP (Break-even Point) – लाभ शून्य होने का बिंदु
6. सुरक्षा सीमा (Margin of Safety) – BEP के ऊपर बिक्री की अतिरिक्त मात्रा

3. संविचित विश्लेषण के प्रयोग (Applications of Break-even Analysis)

(क) लाभ और हानि का पूर्वानुमान (Profit Planning)

- व्यवसाय BEP और Contribution के आधार पर लाभ का अनुमान लगा सकता है।
- निर्णय: कितनी बिक्री पर लाभ शुरू होगा।

(ख) मूल्य निर्धारण (Pricing Decisions)

- किसी उत्पाद का मूल्य तय करने में मदद करता है ताकि BEP जल्दी हासिल हो।

(ग) उत्पादन और बिक्री योजना (Production & Sales Planning)

- कितनी इकाई या राशि का उत्पादन करना चाहिए, ताकि हानि न हो।

(घ) लागत नियंत्रण (Cost Control)

- स्थिर और परिवर्तनीय लागत को अलग करके लागत कम करने के उपाय निर्धारित कर सकते हैं।

(ङ) निवेश निर्णय (Capital Investment Decisions)

- नया प्रोजेक्ट या मशीन लगाने पर BEP और सुरक्षा सीमा देखकर जोखिम का मूल्यांकन।

(च) जोखिम मूल्यांकन (Risk Assessment)

- सुरक्षा सीमा (Margin of Safety) से पता चलता है कि बिक्री में गिरावट आने पर व्यवसाय कितना सुरक्षित है।

4. उदाहरण (Example)

मान लें:

विवरण	राशि (₹)
बिक्री	1,50,000
BEP बिक्री	1,00,000
Contribution	50,000
स्थिर लागत	40,000
लाभ	10,000

प्रयोग:

- बिक्री बढ़ाने पर लाभ अनुमानित किया जा सकता है।
- BEP से ऊपर बिक्री कितनी है → सुरक्षा सीमा 50,000 ₹
- लागत घटाने पर BEP कम होगा → जल्दी लाभ।

5. सारांश

संविचित विश्लेषण के प्रयोग:

1. लाभ नियोजन
2. मूल्य निर्धारण
3. उत्पादन एवं बिक्री योजना
4. लागत नियंत्रण
5. निवेश निर्णय
6. जोखिम मूल्यांकन

“प्रमाप लेख और विचरण विश्लेषण केवल सामग्री और श्रम के लिए”

1. प्रमाप लेख (Standard Costing / Pramap Lekh)

परिभाषा:

- प्रमाप लेख वह प्रणाली है जिसमें किसी उत्पादन या सेवा की सामग्री, श्रम और ओवरहेड की मानक लागत (Standard Cost) पहले से निर्धारित की जाती है।
- इसका उद्देश्य वास्तविक लागत और मानक लागत के बीच भिन्नता (Variance) जानना है।

मुख्य बिंदु:

1. सामग्री (Material): मानक मात्रा × मानक दर
2. श्रम (Labour): मानक समय × मानक दर

उदाहरण:

- मानक सामग्री = 5 किलोग्राम × ₹20 = ₹100
- मानक श्रम = 2 घंटे × ₹50 = ₹100

- कुल मानक लागत = ₹200

2. विचरण विश्लेषण (Variance Analysis / Vicharan Vishleshan)

परिभाषा:

- यह विश्लेषण करता है कि वास्तविक लागत (Actual Cost) और मानक लागत (Standard Cost) में अंतर क्यों हुआ।
- मुख्य रूप से दो प्रकार:

(क) सामग्री विचरण (Material Variance)

1. मूल्य विचरण (Material Price Variance, MPV)

$$\text{MPV} = (\text{Standard Price} - \text{Actual Price}) \times \text{Actual Quantity}$$

2. मात्रा विचरण (Material Usage / Quantity Variance, MUV)

$$\text{MUV} = (\text{Standard Quantity} - \text{Actual Quantity}) \times \text{Standard Price}$$

(ख) श्रम विचरण (Labour Variance)

1. दर विचरण (Labour Rate Variance, LRV)

$$\text{LRV} = (\text{Standard Rate} - \text{Actual Rate}) \times \text{Actual Hours}$$

2. समय / दक्षता विचरण (Labour Efficiency / Time Variance, LEV)

$$\text{LEV} = (\text{Standard Hours} - \text{Actual Hours}) \times \text{Standard Rate}$$

3. उदाहरण (Material & Labour)

मान लें:

विवरण	मानक	वास्तविक
सामग्री (Material)	$5 \text{ kg} \times ₹20 = ₹100$	$6 \text{ kg} \times ₹22 = ₹132$
श्रम (Labour)	$2 \text{ hr} \times ₹50 = ₹100$	$3 \text{ hr} \times ₹45 = ₹135$

(क) सामग्री विचरण

- MPV: $(20 - 22) \times 6 = -12$ (अवांछनीय)
- MUV: $(5 - 6) \times 20 = -20$ (अवांछनीय)
- कुल सामग्री विचरण = -32 ₹

(ख) श्रम विचरण

- LRV: $(50 - 45) \times 3 = 15$ (सकारात्मक)
- LEV: $(2 - 3) \times 50 = -50$ (अवांछनीय)
- कुल श्रम विचरण = -35 ₹

4. सारांश

1. प्रमाण लेख: मानक लागत का निर्धारण।
2. विचरण विश्लेषण: वास्तविक और मानक लागत का अंतर (सकारात्मक/अवांछनीय) जानना।
3. केवल सामग्री और श्रम के लिए:
 - सामग्री: मूल्य और मात्रा विचरण
 - श्रम: दर और समय/दक्षता विचरण
4. उद्देश्य: लागत नियंत्रण, दक्षता सुधार और प्रबंधन निर्णय।

THE END